पंजीयन संख्या : 68939/98 अंक - 08, वर्ष 24

ज्ञान तत्व

समाज शास्त्र | अर्थ शास्त्र | धर्म शास्त्र | राजनीति शास्त्र

446

-: सम्पादक :-
बजरंग लाल अग्रवाल
रामानुजगंज (छ.ग.)

सत्यता एवं निष्पक्षता का निर्भीक पाक्षिक

पोस्ट की तारीख 01.05.2024
प्रकाशन की तारीख 16.04.2024
पाक्षिक मूल्य - 2.50/- (दो रूपये पचाय पैसे)

"शराफत छोड़ो, समझदार बनो"

"सुनो सबकी, करो मन की"

"समस्याओं के प्रणेता, कर कानून नेता"
"समाधान का आधार ज्ञान यज्ञ परिवार"

"चाहे कोई अत्याचार, नहीं करेंगे नही सहेंगे"
"हमें सुराज्य नही, स्वराज्य चाहिए"

नक्सली और कोंग्रेस दोनों का टूट रहा मनोबल:

मैं छत्तीसगढ़ के रायपुर शहर में रहता हूं, बस्तर रायपुर से नजदीक ही है जहाँ कांग्रेस शासन काल में बस्तर के एक बड़े क्षेत्र को नक्सलियों ने स्वतंत्र क्षेत्र घोषित कर दिया था, वहां के पूर्ववर्ती गांव में उन लोगों ने अपनी राजधानी भी बना ली थी वहां न सेना प्रवेश कर सकती थी ना पुलिस और ना कोई अन्य सरकारी अफसर। हम तीन महीने पहले तक यह कल्पना भी नहीं कर सकते थे कि बस्तर क्षेत्र से कभी नक्सलवाद नियंत्रित भी हो सकेगा। तीन महीने पहले छत्तीसगढ़ की सरकार बदल गई, अमित शाह ने यह डेडलाइन तय कर दी कि तीन वर्ष में भारत से नक्सलवाद खत्म हो जाएगा लेकिन पिछले एक महीने में जिस तरह छत्तीसगढ़ से नक्सलवाद का सफाया हो रहा है। कल ही जिस तरह बड़े-बड़े नक्सलवादी समेत 29 नक्सलवादी मारे गए हैं, उससे यह अंदाज लगता है कि अब 3 वर्ष नहीं एक वर्ष में ही नक्सलवाद भारत से विदा हो जाएगा। जहां छत्तीसगढ़ के आम लोगों ने इस नक्सलवादी संहार पर राहत की सांस ली है, वहीं कांग्रेस प्रमुख भूपेश बघेल ने अलग रोना रोया है। भूपेश बघेल ने यह बात कही है कि बस्तर में जो लोग मारे जा रहे हैं यह सब फर्जी मुठभेड़ है, मरने वाले आदिवासी हैं जिन्हें नक्सली कहकर मारा जा रहा है। मुठभेड़ फर्जी है या असली है यह तो मैं नहीं कह सकता लेकिन मैं यह कह सकता हूं कि नक्सलियों का मनोबल टूट रहा है और साथ में कांग्रेस पार्टी का भी मनोबल टूट रहा है क्योंकि जो भी लोग मारे जा रहे हैं उन नक्सलियों का उस क्षेत्र में बहुत प्रभाव था और उसके प्रभाव से सारे वोट कांग्रेस पार्टी को जाते थे। इसका अर्थ यह हुआ कि नक्सलियों के मरने से अप्रत्यक्ष रूप से कांग्रेस की कमर टूट रही है इसीलिए भूपेश बघेल अपने घटते हुए वोटों के कारण इतने चिंतित हैं। मैं छत्तीसगढ़ की सरकार तथा केंद्र सरकार को इस बात के लिए बधाई देता हूं कि उन्होंने नक्सलवादियों की राजधानी पूर्ववर्ती गांव को भी नक्सलियों से मुक्त कर लिया है और नक्सलियों को अपनी राजधानी छोड़कर जंगलों में छिपकर रहने के लिए मजबूर कर दिया है।

न्यायिक जाँच में खुलती दिल्ली के स्कूलों की कलई :

समाचार है कि दिल्ली उच्च न्यायालय ने दिल्ली सरकार द्वारा संचालित 10 स्कूलों की व्यवस्था की जांच करवाई। उच्च न्यायालय ने यह पाया कि वहां की सारी स्थिति बहुत ही खराब है। उच्च न्यायालय ने इसके लिए दिल्ली सरकार के पदाधिकारियों को अपने न्यायालय में बुलाकर उनसे पूछताछ की और उन्हें इस बात के लिए डांटा कि आखिर दिल्ली सरकार द्वारा संचालित स्कूलों की इतनी हालत खराब क्यों है। प्रश्न यह खड़ा होता है की दिल्ली उच्च न्यायालय गलत है अथवा वहां के स्कूलों की हालत इतनी दयनीय है। यह बात समझ में नहीं आ रही है कि अभी तक

दिल्ली सरकार अपने स्कूलों का दुनिया में ढिंढोरा पीटती थी। आखिर मनीष सिसोदिया के जेल जाते ही या अरविंद केजरीवाल के जेल जाते ही इतनी स्थिति बदल कैसे गई। या तो स्कूलों की हालत वास्तव में खराब थी और विज्ञापन के माध्यम से उन्हें बहुत अच्छा प्रचारित किया जा रहा था अथवा कुछ गिने-चुने स्कूलों को बहुत अधिक सुधार कर दुनिया को उन्हीं का विजिट कराया जा रहा था। यह भी हो सकता है कि दिल्ली के प्राइवेट स्कूलों पर अनेक कानूनी प्रतिबद्ध लगाकर उनके स्तर को इतना गिराया जा रहा था कि वह कंपटीशन ही ना कर सके। कारण चाहे जो भी रहा हो लेकिन यह बात अवश्य सोचनीय है कि अरविंद जी के जेल जाते ही दिल्ली सरकार और दिल्ली की व्यवस्था इतनी लड़खड़ा कैसे गई। दिल्ली की पानी की व्यवस्था के विषय में तो अरविंद जेल से ही चिंता जाहिर कर चुके हैं, अन्य मामलों में भी दिल्ली की स्थिति खराब बताई जा रही है। वैसे मेरा व्यक्तिगत अनुभव यह है कि यदि कोई तानाशाह एकाएक किनारे हो जाता है तो सारी व्यवस्था चौपट हो जाती है। अरविंद केजरीवाल भारत की राजनीति में सबसे बड़े तानाशाह माने जाते हैं और अरविंद के दूर होते ही यह बात भी साफ दिखने लगी है। मैं यह चाहता हूं कि सच्चाई समाज के सामने आनी चाहिए।

विदेशी उच्च शिक्षित और देशी ज्ञानियों के बीच चुनाव :

भारत में जो वर्तमान चुनाव हो रहे हैं, यह चुनाव कोई साधारण चुनाव नहीं है। यह चुनाव दो विचारधाराओं के बीच टकराव है, दो संस्कृतियों के बीच टकराव है या कहें तो दो व्यक्तित्व के बीच टकराव है। एक तरफ है विदेशों में उच्च शिक्षा प्राप्त किए हुए अज्ञानी लोग, जिन्हें विदेशी संस्कृति का बहुत अनुभव है जिन्हें विदेशी संस्कृति पर गर्व भी है गर्व से ये लोग कहते भी हैं कि मैं हार्वर्ड का पढ़ा हुआ हूं। मुझे विदेश में सम्मान दिया गया है इसके अलावे अन्य अनेक बातें करते हैं। दूसरी तरफ है एक अल्प शिक्षित ज्ञानी लोग जो कहते हैं कि मैं भारत के हिमालय में ज्ञान प्राप्त किया हूं, जो कहते हैं कि मैं जंगलों में घूम- घूमकर अनुभव प्राप्त किया हूं, मेरी शिक्षा तो बहुत कम है लेकिन ज्ञान के आधार पर मैं अन्य सब लोगों से मजबूत हूं। एक भारत में विदेशी संस्कृति को मजबूत करना चाहते हैं क्योंकि उनकी नजर में विदेशी संस्कृति भारतीय संस्कृति की तुलना में बहुत आगे है दूसरे यह प्रस्तुत कर रहे हैं कि हमें भारतीय संस्कृति पर गर्व है, हम दुनिया में भारतीय संस्कृति को पहुंचाएंगे और हम दुनिया की अन्य संस्कृतियों से भारतीय संस्कृति को आगे लाने का प्रयास करेंगे। अब भारत के लोगों को यह निर्णय करना है कि वह किस संस्कृति के पक्षधर हैं अति उच्च शिक्षित अज्ञानियों की या अल्प शिक्षित ज्ञानियों की। हार्वर्ड से शिक्षा और सम्मान प्राप्त

व्यक्तियों की या हिमालय के पहाड़ों से ज्ञान प्राप्त व्यक्तियों की । मैंने तो अपना निर्णय कर लिया है ।

भावनात्मकता से वैचारिकी पर होता चुनाव संतोषजनक

भारत के चुनावी इतिहास में पहली बार विचारों की चर्चा हो रही है। पहले के चुनाव भावनात्मक आधार पर लड़े जाते थे। कभी गांधी के नाम पर, कभी इंदिरा की हत्या के नाम पर तो कभी हिंदुत्व के नाम पर चुनाव में लहर बनाने की कोशिश की गई। लेकिन 2024 के चुनाव किसी भावनात्मक लहर पर नहीं बल्कि वैचारिक संघर्ष पर टकराते दिख रहे हैं। कांग्रेस के नेतृत्व में विपक्ष अल्पसंख्यक सशक्तिकरण पर विशेष महत्व दे रहा है तो सत्ता पक्ष समान नागरिक संहिता को आगे ला रहा है। विपक्ष जातिय आरक्षण बढ़ाने पर जोर दे रहा है तो सत्ता पक्ष इस मामले में पूरी तरह चुप है। सत्ता पक्ष जातिवाद को निरोत्साहित करके महिला, किसान, युवा, गरीब जैसा नया जातीय समीकरण बनाने की कोशिश कर रहा है। विपक्ष ने घोषणा की है कि वह सुरक्षा का बजट सीमित करेगा। यहां तक कि बने हुए एटम बम भी समाप्त करने का प्रयास करेगा। इसके बदले में विपक्ष आम लोगों को अधिक से अधिक नौकरियां देगा तथा उनको नगद राशि देकर उनकी क्रय शक्ति बढ़ाएगा। सत्ता पक्ष में घोषणा की है कि हम राष्ट्रीय सुरक्षा को सबसे अधिक महत्व देंगे। सत्ता पक्ष नौकरियों को निरोत्साहित करके रोजगार बढ़ाने की कोशिश करेगा। सत्ता पक्ष नगद पैसा देने की अपेक्षा मुफ्त अनाज, मुफ्त शिक्षा को बढ़ाने का प्रयत्न करेगा। विपक्ष ने घोषणा की है कि हम संविधान में किसी प्रकार का कोई संशोधन नहीं होने देंगे। सत्ता पक्ष ने घोषणा की है कि संविधान में कोई भी संशोधन या बदलाव असंवैधानिक तरीके से नहीं होगा। विपक्ष ने वादा किया है कि हम जातीय जनगणना के साथ-साथ एक आर्थिक जनगणना भी कराएंगे और यदि किसी के पास सीमा से अधिक संपत्ति होगी तो उसमें गरीबों का अधिकार भी सुनिश्चित करेंगे। सत्ता पक्ष ने स्पष्ट किया है कि हम भारत को दुनिया की अर्थव्यवस्था में आगे लाने का प्रयास करेंगे। हमारे प्रयासो से भारत विकासशील नहीं विकसित राष्ट्र बनेगा। मैंने भी दोनों राजनैतिक समूह का अध्ययन किया। मैं समझता हूं कि वर्तमान चुनाव वैचारिक धरातल पर होने के कारण बहुत महत्वपूर्ण है। इस चुनाव में भावनाओं की अपेक्षा वैचारिक धरातल पर सोच-समझकर वोट देने वालों की संख्या बढ़ेगी। मैं इस प्रगति से संतुष्ट हूँ। मेरे विचार से विपक्ष की तुलना में सत्ता पक्ष का घोषणा पत्र अधिक अच्छा है ।

धर्मनिरपेक्षता और तुष्टिकरण की दुविधा में फंसा कांग्रेस:

मैंने कल इस विषय पर चर्चा की थी कि कांग्रेस पार्टी का एक बड़ा धड़ा संघ के साथ तालमेल करने का प्रयत्न कर रहा है, आज हम इस मामले में और आगे विचार कर रहे हैं। कांग्रेस पार्टी का एक मजबूत समूह इस बात का पक्षधर है कि जब तक हम हिंदुओं को अपने विश्वास में नहीं लेंगे तब तक हम मजबूत नहीं हो सकते। यदि हम हिंदुओं को जोड़ सके तब भी मुसलमान तो कहीं जाएगा नहीं क्योंकि मुसलमान के मन में भाजपा के प्रति इतनी चिढ़ है कि वह किसी भी हालत में हमारे साथ रहेगा। दूसरा गुट मानता है कि यदि हमने मुसलमान को नाराज कर दिया तो हिंदू हमारे साथ अभी लंबे समय तक नहीं जुड़ेगा और मुसलमान भी नाराज होकर क्षेत्रीय दलों के साथ जुड़ जाएंगे और जो कुछ भी हमारे पास बचा है वह भी समाप्त हो जाएगा। हिंदुओं के पक्ष में जाने के लिए कमलनाथ, भूपेश बघेल, अशोक गहलोत सरीखे अन्य बड़े-बड़े नेता पूरे जोर से कोशिश कर रहे हैं कि हिंदू मुसलमान के बीच ध्रुवीकरण को रोका जाए। दूसरी ओर राहुल गांधी, दिग्विजय सिंह, जय राम रमेश सहित सभी वामपंथी कम्युनिस्ट नेता इस बात पर पूरी तरह मजबूती के साथ खड़े हुए हैं कि हमें किसी भी स्थिति में अपनी पुरानी नीतियों में बदलाव नहीं करना चाहिए। दोनों गुटों के बीच यह वैचारिक दुविधा दूर होने का नाम नहीं ले रही है। कभी तो राहुल गांधी जनेऊ पहन लेते हैं, अपने को ब्राह्मण घोषित कर देते हैं तो कभी राहुल गांधी राम मंदिर की प्राण प्रतिष्ठा में जाने से भी इंकार कर देते हैं। यह दुविधा कांग्रेस पार्टी के लिए बहुत घातक सिद्ध हो रही है। कांग्रेस पार्टी का एक धड़ा संघ के साथ तालमेल करना चाहता है और मोदी को किनारे करना चाहता है दूसरा धड़ा जो कम्युनिस्टों के प्रभाव में है वह इस बात का पक्षधर है कि हम नरेंद्र मोदी का प्रत्यक्ष विरोध करके ही उन्हें कमजोर कर सकते हैं। अन्य विपक्षी दल कांग्रेस पार्टी के साथ चलने के लिए मजबूर हैं। अरविंद केजरीवाल हिंदुओं को अपने साथ जोड़कर चलना चाहते हैं तो अखिलेश यादव और ममता बनर्जी मुसलमान को अपने साथ जोड़कर रखना चाहते हैं। इस तरह पूरा का पूरा विपक्ष हिंदू और मुसलमान इस मामले पर कोई एक नीति नहीं बना पा रहा है और इसका दुष्प्रभाव वर्तमान चुनाव में एकदम साफ दिख रहा है कि चुनाव लगभग एकपक्षीय होते जा रहे हैं, नीरस होते जा रहे हैं और राष्ट्रीय मुद्दों पर ना खड़े होकर क्षेत्रीय मुद्दे तथा लोकल लीडरों पर निर्भर कर रहे हैं। हमारे कई मित्र इस बात से बहुत चिंतित हैं कि इस तरह लोकतंत्र में चुनाव का एकपक्षीय होना उचित नहीं है लेकिन मैं दलविहीन राजनीति का पक्षधर हूं और चुनाव में यदि दलगत राजनीति कमजोर हो जाती है या समाप्त हो जाती है तो यह देश के लिए हित में होगा।

यह बात साफ होती जा रही है कि विपक्षी दलों ने वर्तमान चुनाव में दो प्रकार के प्लान बनाए थे, उनका प्लान यह था कि यदि विपक्षी दल बहुमत के करीब पहुंच जाएंगे तो जोड़-तोड़ करके अपना प्रधानमंत्री चुन लेंगे। आगे प्लान यह भी था कि यदि विपक्षी दल बहुमत से बहुत दूर

रह जाएंगे तो वह भारतीय जनता पार्टी में से ही नरेंद्र मोदी की जगह किसी अन्य को प्रधानमंत्री बनाने की कोशिश करेंगे। अब विपक्षी दलों का आंतरिक सर्वे यह स्पष्ट कर रहा है कि विपक्षी दल बहुमत से बहुत दूर हैं इसलिए पिछले कई दिनों से विपक्षी दलों ने 'प्लान बी' पर काम शुरू कर दिया है। 'प्लान बी' का मतलब यह है कि संघ की तरफ से विपक्षी दल एक साथ जुड़कर नरेंद्र मोदी के खिलाफ नितिन गडकरी को प्रधानमंत्री बनने में मदद करेंगे। पिछले दिनों यह बात साफ-साफ दिखाई कि विपक्ष के बड़े नेता उद्धव ठाकरे के खासमखास संजय राउत ने खुलेआम यह कहा कि नितिन गडकरी हमारे साथ आ जाएं हम उन्हें अपने साथ देखना चाहते हैं। उसके बाद भी लगातार नितिन गडकरी के पक्ष में विपक्षी दलों ने वातावरण बनाया उसके साथ-साथ विपक्ष ने संघ के साथ भी संपर्क करना शुरू किया और संघ को यह बार-बार संदेश भेजा गया कि आप नरेंद्र मोदी की जगह नितिन गडकरी को आगे करो। आश्चर्य हो रहा है कि पिछले दिनों राहुल और दिग्विजय सिंह को छोड़कर बाकी सभी कांग्रेसियों की भाषा संघ के प्रति नरम हो गई है और मोदी के खिलाफ उग्र हो गई है। यहां तक कि कांग्रेस पार्टी ने मोदी के खिलाफ और संघ के पक्ष में यह खुलेआम बयान दिया है कि संघ मुसलमान का शत्रु नहीं है बल्कि संघ ने तो मुसलमान के साथ मिलकर बंगाल में सरकार चलाई थी। मेरे कई निकट के मित्रों ने भी मुझे व्यक्तिगत रूप से यह बात बताई की विपक्षी दल धीरे-धीरे नितिन गडकरी को स्वीकार करते जा रहे हैं और संघ के प्रति भी नरम पड़ते जा रहे हैं। यह भारत की राजनीति में एक महत्वपूर्ण बदलाव है कि भारत का विपक्षी दल राहुल गांधी की बात ना मानकर और दिग्विजय सिंह को किनारे करके संघ के साथ अंदर-अंदर कोई समझौता कर रहा है। मेरी व्यक्तिगत जानकारी के अनुसार अब तक संघ ने या नितिन गडकरी ने ऐसा कोई आभास नहीं दिया है लेकिन विपक्षी दलों का यह प्रयास लगातार जारी है।

फर्जी विडियो की दुकान सजी है सावधान रहें:

लगभग 15 दिन पहले अंबिकापुर के मेरे एक मित्र ने मुझे एक वीडियो भेजा जिसमें यह साफ तौर पर कहा जा रहा था कि संघ के नागपुर कार्यालय ने नागपुर में एक मीटिंग करके यह घोषणा की है कि संघ अब नरेंद्र मोदी सरकार का विरोध करेगा। मैं भी वह वीडियो सुना और मैंने कई जगह से इस संबंध में जानकारी प्राप्त की। मुझे पता चला कि इस तरह की कोई बात नहीं है लेकिन दो-तीन दिनों के बाद ही यह बात साफ हो गई कि वह वीडियो फर्जी था, नागपुर के ही दो लोगों ने तैयार किया था जिन में एक मुसलमान भी था और उन दोनों पर मुकदमा कायम कर दिया गया है। हो सकता है कि उनकी गिरफ्तारी भी हो। मुख्य प्रश्न यह खड़ा होता है कि इस प्रकार की जालसाजी किन लोगों के द्वारा की जा रही है, किस तरह की जा रही है और इससे कितना लाभ हो

रहा है? मुझे तो वह वीडियो सुनते ही या आभास हो गया था कि यह फर्जी है लेकिन कुछ और लोगों को भ्रम भी हो सकता है जैसा कि मेरे मित्र को भी हुआ था तो विपक्ष की इसमें कितनी भूमिका थी यह तो अभी नहीं कहा जा सकता लेकिन यह बात अवश्य संदेह की है कि इसमें या तो विपक्ष का कोई हाथ रहा होगा अथवा कोई विदेशी हाथ होगा क्योंकि बिना किसी बड़ी आर्थिक मदद के इस प्रकार का फर्जी वीडियो नहीं बन सकता। खासकर ऐसा व्यक्ति नहीं बना सकता जो सीधा राजनीति में नहीं है। आज इस तरह की मिलावटी दुकान देश में खुली हुई है यह भी एक चिंता का विषय है यह वीडियो अकेला नहीं है जो फर्जी बनाया गया हो ऐसे फर्जी वीडियो तो बहुत बना रहे हैं और दिखाए जा रहे हैं। उनकी विश्वसनीयता भी समाप्त हो गई है लेकिन यह जो वीडियो था वह इतनी सफाई से बनाया गया था कि मुझे भी इस पर तत्काल संदेह नहीं हुआ और मैंने कुछ जगहों से इस संबंध में सत्यता की जानकारी प्राप्त की। मैं इस संबंध में अपने मित्रों को सावधान करता हूं कि वह अविश्वसनीय समाचारों पर विश्वास करने से बचें।

"अरविन्द केजरीवाल का राजनैतिक भविष्य" पर मेरी भविष्यवाणी-

मेरे एक मित्र अर्पित अनाम जी हैं। आप हरियाणा के अंबाला के रहने वाले हैं। हम लोग 30 वर्ष पहले जब संविधान मंथन और देश के प्रस्तावित संविधान का प्रारूप तैयार कर रहे थे उसमें भी अर्पित जी की बहुत अच्छी भूमिका रही है। हम लोग प्रतिदिन रात 8:00 बजे से 9:00 बजे तक ज़ूम पर बैठकर जिन विषयों पर चर्चा करते हैं उसमें भी वे कई बार सम्मिलित होते हैं। उनकी एक विशेषता है कि वह बोलते बहुत कम है और समझते बहुत अधिक हैं। मैं पुरानी ग्रामीण परिपाटी का होने के कारण पुराना इतिहास सुरक्षित नहीं रख पाता। अपने जीवन के किसी भी फोटोग्राफ या लिखा हुआ साहित्य अपवाद स्वरूप ही सुरक्षित मिलता है लेकिन अर्पित अनाम इस प्रकार की ऐतिहासिक घटनाओं को सुरक्षित रखते हैं। वर्तमान संदर्भ में अपनी पोस्ट पर उन्होंने 7 वर्ष पूर्व का लिखा हुआ मेरा लेख फिर से डाला है। मैं वह लेख फिर से आपको भेज रहा हूँ जिसमें आप अरविंद केजरीवाल के भविष्य का सही आकलन कर सके :-

बजरंग मुनि जी की 8 अप्रैल 2017 की पोस्ट :-

<u>अरविन्द केजरीवाल का राजनैतिक भविष्य</u>

चार ही वर्ष बीते हैं जिसके पूर्व भारत की जनता अरविंद केजरीवाल को योग्य प्रधानमंत्री के रुप में देखने लगी थी। अन्ना हजारे सहित अनेक लोगों ने उन पर विश्वास किया। अन्ना जी को धोखा देने के बाद भी दिल्ली की जनता ने अरविंद केजरीवाल को ऐतिहासिक समर्थन दिया। एक डेढ़ वर्ष

बीतते बीतते ऐसा लगने लगा कि अरविंद केजरीवाल का भविष्य पागलखाने की तरफ बढ़ रहा है और अब एक डेढ़ वर्ष और बीता है तो पागलखाने की जगह जेलखाने की चर्चाएँ शुरु हो गई हैं।

मैंने राजनीति में दो प्रकार के लोगों को देखा हैं- 1)वे जो गलत काम भी ऐसे कानून सम्मत तरीके से करते है कि वे हर प्रकार के आरोपों से मुक्त रहते हैं। 2)वे जो सही काम गैर कानूनी तरीके से करते हैं। ऐसे लोगों को समाज में सम्मान मिलता है भले ही वह काम गैर कानूनी ही क्यों न हो। केजरीवाल ने एक तीसरी लाइन पकड़ी जिसमें उन्होनें गलत कार्य गैर कानूनी तरीके से करना शुरु किया। शुंगलू कमेटी सहित अन्य अनेक कार्य उनकी इस कसौटी से अलग भी रखें तब भी इनका राम जेठमलानी को गुप्त रुप से चार करोड़ रुपया देने का प्रयास ऐसे संदेह के लिये पर्याप्त है कि उन्होने गलत कार्य गलत तरीके से किया।

अरविन्द केजरीवाल का काम करने का तरीका साम्यवादियों से मिलता-जुलता है। साम्यवादी व्यक्तिगत जीवन में लगभग ईमानदार होते हैं किन्तु राजनैतिक उद्देश्यों की पूर्ति के लिये किसी भी सीमा तक गलत कर सकते हैं जिसमें हत्या या बलात्कार भी शामिल हो सकता है। पार्टी के लिये भ्रष्टाचार को तो ये लोग आमतौर पर सही मानते हैं। अरविन्द जी ने जिस तरह राम जेठमलानी के नाम से इतनी बड़ी रकम निकालने की कोशिश की उसमें से जेठ मलानी जी को क्या देना था और पार्टी फंड कितना था यह अब तक स्पष्ट नहीं हुआ है किन्तु राशि की बढ़ाई गई मात्रा और गुप्तता से संदेह तो होता है। धीरे-धीरे अरविन्द जी का राजनैतिक भविष्य साफ होता जा रहा है जिसके अनुसार वे प्रधानमंत्री की दौड़ से तो पूरी तरह बाहर हो गये हैं और यदि वे मुख्यमंत्री का कार्यकाल पूरा कर सके तो स्पष्ट नहीं कि वे किस खाने की ओर जायेंगे।

अरविन्द के प्रति की गयी मेरी भविष्यवाणी सत्य सिद्ध हो रही है। लोग जानना चाहते हैं कि यह भविष्यवाणी किस आधार पर की गई थी। मैंने अपने मित्र के क्रियाकलापों में ऐसा क्या पाया जिसके आधार पर मैंने यह निष्कर्ष निकाला। मित्रों अरविंद केजरीवाल में टैलेंट बहुत है बहुत परिश्रमी है लक्ष्य बनाकर बहुत तेज गति से काम करते हैं यही सब देखकर मैंने सबसे पहले यह निष्कर्ष निकाला था कि यह आदमी व्यवस्था परिवर्तन कर सकता है लेकिन अरविंद केजरीवाल जल्दी ही व्यवस्था परिवर्तन को छोड़कर सत्ता परिवर्तन की दिशा में लग गए। तब मैंने अरविंद को सलाह दी कि अन्ना हजारे को छोड़ दो और प्रशांत भूषण वगैरा से भी मुक्ति पा जाना अच्छा है क्योंकि आप प्रधानमंत्री बनना चाहते हो और यह सब लोग आपकी प्रगति में बाधक बनेंगे। मैंने टैलेंट देखकर यह निर्णय किया था कि अरविंद में प्रधानमंत्री बनने की योग्यता है लेकिन जल्दी ही मैं इस निष्कर्ष पर पहुंचा कि अरविंद केजरीवाल में जितनी अधिक योग्यता है उससे कई गुना अधिक

महत्वाकांक्षा भी है । मेरा यह अनुभव बताता है कि यदि कोई टैलेंटेड व्यक्ति अपनी क्षमता से अधिक महत्वाकांक्षी हो जाता है तो वह या तो पागल हो जाता है या आत्महत्या कर लेता है, उसके लिए और कोई तीसरा मार्ग नहीं दिखता। अरविंद केजरीवाल में जितना अधिक टैलेंट था उसकी तुलना में उनके अंदर महत्वाकांक्षा बहुत अधिक हो गई और वह जनता पर भरोसा ना करके अपने टैलेंट से प्रधानमंत्री बनने की जल्दबाजी करने लगे । इसके दो ही परिणाम होते हैं या तो पागल खाना और या आत्महत्या । अरविंद केजरीवाल उस प्रकार के राजनीतिज्ञ नहीं है जिस प्रकार के लालू यादव, मायावती या अन्य लोग हैं इसलिए अरविंद केजरीवाल भविष्य में किस दिशा में जाएंगे यह तो अभी नहीं बताया जा सकता लेकिन इतना निश्चित है कि अरविंद के जीवन के हितैषी लोगों को उन्हें उचित सलाह देनी चाहिए। मैं आपको यह भी स्पष्ट कर दूं कि 12 वर्ष पूर्व मैंने सोनिया गांधी को चिट्ठी लिखकर राहुल गांधी के राजनीतिक भविष्य के विषय में भी सलाह दी थी, आप उस चिट्ठी को पढ़कर भी यह स्पष्ट जान सकते हैं कि मेरी सलाह कितने प्रतिशत सही निकली।

अल साल्वाडोर में साबित हुआ न्याय और सुरक्षा जनता की पहली मांग:

दुनिया में एक छोटा सा देश अल-साल्वाडोर लोकतंत्र के समक्ष एक नई चुनौती पेश कर रहा है। वहाँ की कुल आबादी एक करोड़ से भी कम है और मुख्यतः ईसाई ही अधिक हैं। पिछले कुछ वर्षों में वहाँ नाईब बुकेली नामक राष्ट्रपति यह घोषणा करके चुने गए थे कि वह सबसे पहले इस देश को अपराधियों से मुक्त करेंगे। चुनाव जीतने के बाद उन्होंने अपना वादा पूरा किया और सभी बड़े अपराधियों को जेल में बंद कर दिया गया। न्याय व्यवस्था में भी सुधार किया गया। अब अगला चुनाव हुआ तो बुकेली को उसे देश में 85% मत प्राप्त हुए वहाँ की जनता इस बात से पूरी तरह संतुष्ट रही की बुकेली ने अपना वादा निभाया। अल-साल्वाडोर के आसपास के देश भी इस विषय पर गंभीरता से सोच रहे हैं कि क्या हमें भी अल-साल्वाडोर सरीखी लोकतांत्रिक व्यवस्था पर चलना उचित है? अल-सल्वाडोर ने जरा भी लोकतंत्र नहीं छोड़ा है। वह पूरी तरह लोकतांत्रिक प्रक्रिया से आगे बढ़ रहे हैं और अप्रत्यक्ष रूप से तानाशाही का सहारा ले रहे हैं। उत्तर प्रदेश की योगी सरकार भी अल साल्वाडोर की तरह ही लोकतंत्र का नया संस्करण प्रस्तुत कर रही है। उत्तर प्रदेश में भी उसी तरह सुरक्षा को सर्वोच्च प्राथमिकता दी जा रही है। स्थिति यहाँ तक आ गई है कि कुछ अति कट्टरपंथी मुसलमान और विपक्षी दलों को छोड़कर बाकी मुसलमान भी धीरे-धीरे इस सच्चाई को समझने लगे हैं। मुझे उम्मीद है कि नरेंद्र मोदी भी इस चुनाव के बाद देश के समक्ष एक ऐसा लोकतांत्रिक ढांचा प्रस्तुत करेंगे जो सारी दुनिया के लिए आदर्श हो सकता है।

भारत का हर नागरिक है यहाँ का मूल निवासी :

लोकसभा के चुनाव शुरू हो गए हैं कांग्रेस पार्टी ने अपना घोषणा पत्र जारी कर दिया है भारतीय जनता पार्टी के भी घोषणा पत्र की कई बातें सामने आ गई हैं। दोनों के विचारधाराओं में बहुत फर्क दिख रहा है। भारतीय जनता पार्टी ने अपनी प्राथमिकताओं में गरीब, महिला, किसान और युवा इन चारों को मिलाकर ज्ञान शब्द पर फोकस किया है तो कांग्रेस पार्टी ने अपने घोषणा पत्र में अल्पसंख्यक, आदिवासी, जाति जनगणना और बेरोजगारी को फोकस किया है। इस तरह दो विपरीत विचारों को लेकर दोनों पक्ष मैदान में कूद पड़े हैं। मेरे विचार से कांग्रेस पार्टी की घोषणा पत्र में अल्पसंख्यक, आदिवासी, जातीय जनगणना सरीखी जो बातें हैं यह वर्ग संघर्ष पैदा करने वाली है। जातिवाद, सांप्रदायिकता को बढ़ाने वाली है यह समाज में विघटन पैदा कर सकती हैं जबकि भारतीय जनता पार्टी के विचारों में सांप्रदायिकता और वर्ग संघर्ष से अलग जातिवाद के विरुद्ध एक नई संरचना का वादा किया गया है। कांग्रेस पार्टी समाज को आदिवासी गैर आदिवासी में बांटना पसंद कर रही है तो भारतीय जनता पार्टी समाज को ग्रामीण और शहरी के बीच में विभाजित देखना चाहती हैं। मेरे विचार से आदिवासी गैर आदिवासी का टकराव बहुत अधिक घातक होगा शहरी और ग्रामीण के बीच में यदि कोई संघर्ष होता है कोई टकराव होता है तो वह उतना घातक नहीं है। राहुल गांधी ने यह बात स्पष्ट कर दी हैकि भारत के सभी संसाधनों पर आदिवासियों का पहला अधिकार है क्योंकि वह भारत के मूल निवासी है। मेरे विचार से यह वाक्य बहुत ही खतरनाक है भारत के प्रत्येक देशभक्त नागरिक को इस वाक्य का विरोध करना चाहिए कि भारत का कोई मूल निवासी भी है।

मेरे विचार से यह बात साफ होनी चाहिए कि भारत का जो नागरिक है वह प्रत्येक नागरिक भारत का मूल निवासी है चाहे वह हजार वर्ष से रह रहा हो या आज से। यदि पाकिस्तान से भारत आने वालों को भारत की नागरिकतादी जा रही है उन्हें भी हम दूसरे दर्जे का नागरिक बनाकर नहीं रख सकते। मेरे विचार से राहुल गांधी को इस प्रकार की भाषा छोड़ देनी चाहिए और यदि नहीं मानते हैं तो देश के लोगों को इस बात के लिए मजबूर कर देना चाहिए कि राहुल गांधी इस प्रकार की भाषा ना बोले।

हिन्दुत्त्व की मजबूती हो चुनावी मुद्दा :

वर्तमान भारत में सबसे अधिक चर्चा चुनाव की हो रही है कल राजस्थान में नरेंद्र मोदी ने एक सभा में यह बात साफ की कि कांग्रेस पार्टी ने जो घोषणा पत्र प्रकाशित किया है वह मुस्लिम लीग की घोषणा पत्र सरीखा है। वह देश को विभाजित करने वाला है। दूसरी ओर कल ही राजस्थान में कांग्रेस अध्यक्ष खड़गे ने यह बात कही कि नरेंद्र मोदी राजस्थान में आकर कश्मीर के धारा 370

की चर्चा करते हैं, राजस्थान में कश्मीर की चर्चा का क्या औचित्य है। इन दोनों बातों से यह स्पष्ट होता है कि अगला चुनाव सीधा हिंदुत्व और इस्लाम के बीच लड़ा जा रहा है अब भ्रष्टाचार के मुद्दे भी पीछे छूट रहे हैं, सुशासन का मुद्दा भी छूट रहा है, सीधा-सीधा यह मामला सामने आ रहा है कि अब तो चुनाव हिंदुत्व और इस्लाम के बीच ही होना चाहिए। मुझे भी ऐसा लगता है कि भारत की सबसे बड़ी समस्या सांप्रदायिकता है सांप्रदायिकता ने ही पहले भी देश का विभाजन कराया सांप्रदायिकता फिर धीरे-धीरे विभाजन की दिशा में जा रही थी सांप्रदायिकता कश्मीर को देश से अलग करने का प्रयत्न कर रही थी। यदि देश में सांप्रदायिकता बढ़ती रही और सांप्रदायिकता का गठजोड़ राज्य से हो गया तो यह देश के लिए बहुत खतरनाक होगा। मुझे खुशी है कि नरेंद्र मोदी ने गांधी की दिशा में चलने का वचन दिया है स्पष्ट है कि गांधी सावरकर की दिशा के बिल्कुल विरुद्ध थे। सावरकर संगठित हिंदुत्व के पक्षधर थे और गांधी वैचारिक हिंदुत्व के। मेरे विचार से संघ भी अब धीरे-धीरे सावरकर की लाइन को छोड़कर गांधी की लाइन की दिशा में बढ़ता जा रहा है। भारत की जनता सब कुछ अच्छी तरह देखकर यह महसूस कर रही है कि भारत को हिंदुत्व के माध्यम से दुनिया के सामने अपने अपनी विचारधारा प्रस्तुत करनी चाहिए। मैं यह भी देख रहा हूं कि दुनिया के अनेक देश हिंदुत्व के मजबूत होने से चिंतित दिख रहे हैं। अमेरिका भी कांग्रेस और अरविंद केजरीवाल के प्रति चिंता व्यक्त कर चुका है, पाकिस्तान तो अपना प्रयत्न कर ही रहा है लेकिन चीन से भी खबरें आ रही हैं कि वह कुछ एआई तकनीक के माध्यम से चुनाव को प्रभावित करना चाहता है। दुनिया की अनेक ताकतें मुस्लिम समर्थक विपक्ष को शक्ति देने की तैयारी कर रही है लेकिन मुझे यह विश्वास हो रहा है कि भारत का हिंदुत्व अब जाग गया है भारत का हिंदुत्व अब दुनिया को ठीक दिशा दिखाने के लिए आगे आने के लिए तैयार हो गया है और अगला चुनाव इस दिशा में यह साफ कर देगा कि भारत का हिंदुत्व सारी दुनिया का मार्गदर्शन देने के लिए कितना मजबूत है।

विदेशी धरती पर भारतीय अपराधियों की हत्या पर खेल:

कल समाचार पत्रों में एक ही विचार दो प्रकार से दो अलग-अलग लोगों ने प्रस्तुत किए। वर्तमान समय में चुनाव चल रहे हैं और ऐसे संवेदनशील समय में इस प्रकार के विचार प्रस्तुत करने का अलग-अलग उद्देश्य क्या है यह समझ में नहीं आ रहा है। कल ही प्रसिद्ध समाचार निर्माता बी.बी.सी. ने एक विस्तृत रिपोर्ट प्रकाशित की है जिसके अनुसार पाकिस्तान में जो भारतीय आतंकवादी छुपकर मारे जा रहे हैं उसमें भारतीय प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी का हाथ है। क्योंकि इस प्रकार का गुप्त कार्य करने की जिम्मेदारी रॉ संभालता है और यह विभाग नरेंद्र मोदी ने अपने पास

रखा हुआ है। बी.बी.सी. के अनुसार यह संभव ही नहीं है कि बिना किसी विदेशी आश्वासन या मदद के पाकिस्तान या किसी अन्य देश में इतनी बड़ी संख्या में आतंकवादियों को मार दिया जाए। दूसरी ओर कल ही नरेंद्र मोदी ने एक चुनावी सभा में यह कहा कि भारत अब पहले वाला देश नहीं है। अब भारत जरूरत पड़ने पर अपनी सुरक्षा के लिए दूसरे देश में घुसकर मारना भी जानता है। अब भारत सुरक्षा के लिए आक्रमण भी करने के लिए तैयार हैं। विचारणीय प्रश्न यह है कि ठीक चुनाव के समय बी.बी.सी. ने यह रिपोर्ट क्यों प्रकाशित की। बी.बी.सी. भी यह बात अच्छी तरह जानता होगा कि इस प्रकार के रिपोर्ट से वर्तमान चुनावों में नरेंद्र मोदी का नुकसान कम और फायदा अधिक होगा, फिर भी उसने यह रिपोर्ट प्रकाशित की। जिसके बदले में नरेंद्र मोदी ने नपे तुले शब्दों में इस रिपोर्ट का लाभ उठाने की कोशिश की। वैसे तो यह बात साफ नहीं है कि बी.बी.सी. के रिपोर्ट में किसी प्रकार की सच्चाई है लेकिन यदि किसी प्रकार की सच्चाई भी हो तो इसके लिए हम भारत सरकार को कटघरे में नहीं खड़ा कर सकते। क्योंकि पाकिस्तान पचासों वर्ष से अपने आतंकवादियों को भारत में भेजकर यहां के शांतिप्रिय लोगों की हत्याएं कराता रहा है और ऐसे हत्यारों को पाकिस्तान शरण देता रहा है। स्वाभाविक है कि पाकिस्तान का ही कोई गुट पाकिस्तान सरकार को ब्लैकमेल करने के लिए इस प्रकार की हत्याएं कराता हो और बी.बी.सी. इसको आधार बनाकर भारत को बदनाम करना चाहता हो। सच्चाई चाहे जो भी हो अपराधी चाहे आपसी संघर्ष में मरते हो या किसी ईश्वरीय व्यवस्था में मरते हो लेकिन उनके मरने या मारे जाने से नरेंद्र मोदी का राजनैतिक ग्राफ बढ़ता हो तो मैं इससे खुश हूँ।

श्रम शोषण और शिक्षित बेरोजगारी :

एक समाचार प्रकाशित हुआ है कि भारत के शिक्षित लोगों में लगभग 80 प्रतिशत बेरोजगार हैं। इसके प्रति बहुत लोगों ने चिंता भी व्यक्त की है लेकिन कारण और समाधान आज तक कोई नहीं बता सका। जब भारत स्वतंत्र हुआ था उस समय श्रमजीवियों की तुलना में शिक्षित लोगों की बहुत कमी थी। इसलिए उस समय श्रम की तुलना में शिक्षा को अधिक प्रोत्साहित किया गया और शिक्षित रोजगार को बहुत आकर्षक बनाया गया। जिससे श्रमजीवी अधिक से अधिक मात्रा में शिक्षा की ओर पलायन कर सके। वर्तमान भारत में शिक्षित लोगों की संख्या बहुत तेजी से बढ़ रही है। श्रमजीवी बहुत तेज गति से शिक्षा की तरफ पलायन कर रहे हैं। श्रम करने वाले की कमी हो गई है और शिक्षित की संख्या में बाढ़ आ गई है। ऐसे वातावरण में उचित था कि हम अपनी नीतियों में बदलाव करते लेकिन आज भी हम उसी गलत नीति पर लगातार चल रहे हैं और समस्या का रोना रोकर उससे लाभ उठाने का प्रयास कर रहे हैं। उचित तो यह होता की बदली हुई

परिस्थितियों में श्रम और शिक्षा के बीच या अंतर कम किया जाता या दोनों को स्वतंत्र छोड़ दिया जाता। लेकिन आज भी यदि हम शिक्षा को प्रोत्साहन और आकर्षक बनाकर श्रम को इसी तरह उपेक्षित बनाए रखते हैं तो इसमें भूल किसकी है? कल्पना करिए कि भारत का हर नौजवान बी०ए०, एम०ए० पास कर जाए और वह श्रम न करके सरकारी नौकरी के लिए घर बैठा रहे तो इसमें गलती या तो उस नौजवान की है या हमारी व्यवस्था की है। किसी भी दृष्टि से इस परिस्थिति में समाज की कोई गलती नहीं है। शिक्षा को योग्यता का मापदंड घोषित करना चाहिए था रोजगार का नहीं। लेकिन हमारे बुद्धिजीवियों ने चाहे भूल से या श्रम शोषण की इच्छा से शिक्षा को रोजगार के साथ जोड़ दिया। आवश्यकता है कि इस गलती को सुधारा जाए। इसके लिए पहला काम यह करना चाहिए कि सरकारी कर्मचारियों का वेतन उस सीमा तक घटा दिया जाए जो बाजार में उपलब्ध है। दूसरा कार्य यह हो सकता है कि शिक्षा पर सरकार को सारा बजट रोक देना चाहिए और श्रमजीवियों पर लगा देना चाहिए। तीसरा काम यह भी हो सकता है कि न्यूनतम श्रम मूल्य 300 रुपये प्रति दिन से भी अधिक करके पूरे देश भर में रोजगार गारंटी की घोषणा कर दी जाए। तात्कालिक कदम तो ये हो सकते हैं लेकिन दीर्घकालिक कदम के रूप में डीजल, पेट्रोल, बिजली का मूल्य कई गुना बढ़ाकर सब प्रकार का टैक्स खत्म कर दिया जाए। जिससे श्रम का बाजार मूल्य अपने आप 700 रुपये प्रति व्यक्ति तक पहुंच जाए और इसके लिए सरकार को कुछ न करना पड़े। मेरे विचार से इस विषय पर एक बहस छेड़नी चाहिये।

बहुत तेज़ गति से होना चाहिए निजीकरण :

मैं बहुत पहले से लगातार यह कहता रहा हूँ कि भ्रष्टाचार को रोकने के लिए दो अलग-अलग दिशाओं से एक साथ काम शुरू करना पड़ेगा। एक कार्य है अधिकतम निजीकरण और दूसरा उच्च पदों पर बैठे हुए राजनेताओं और सरकारी अफसरों को जेलों में बंद करना। मैं देख रहा हूँ कि सरकार दोनों दिशाओं में सक्रिय है। भ्रष्ट अफसर और नेता लगातार जेलों में बंद किए जा रहे हैं दूसरी ओर निजीकरण की गति भी बढ़ाई जा रही है। आज ही यह समाचार मिला है कि मोदी सरकार ने रेलों का संचालन निजी हाथों में देने की घोषणा कर दी है। शुरुआत में मुंबई हावड़ा के बीच चलने वाली दो रेले निजी कंपनियों को दी जा रही है। यह कार्य तो बहुत पहले हो जाना चाहिए था लेकिन भ्रष्ट नेताओं और अफसरों के विरोध को देखते हुए भारत सरकार बहुत संभल-संभल कर निजीकरण कर रही है। सरकार को चाहिए कि वह बहुत तेज गति से सरकारीकरण को समाप्त करें। सरकारीकरण का मुख्य उद्देश्य तो भ्रष्टाचार करना और अधिक से अधिक लोगों को सरकारी नौकर बनाने तक सीमित था। अब नई सरकार का उद्देश्य न भ्रष्टाचार करना है न सरकारी नौकरों की संख्या बढ़ाना है।

सरकार खुले बाजार और स्वतंत्र प्रतिस्पर्धा की योजनाओं को आगे ले जाना चाहती है। इन दोनों दिशाओं में चलने के लिए वर्तमान चुनाव के बाद का समय सबसे अधिक उपयुक्त है। भारत सरकार अगली सरकार की कार्यप्रणाली पर अभी से विचार कर रही है। उसे चाहिए कि वह बहुत तेज गति से निजीकरण करें जिससे सरकारी विभाग भी टूटते जाएँ और सरकारी नौकरों की संख्या भी कम हो सके। मैं सरकार की दिशा से संतुष्ट हूं लेकिन धीमी प्रगति से संतुष्ट नहीं हूँ। सरकार को हम सबसे जितना समर्थन चाहिए उससे अधिक हम दे रहे हैं तो सरकार के लिए भी उचित है कि हम जितनी तेज गति से निजीकरण चाहते हैं उससे भी अधिक तेज गति से सरकार इस दिशा में आगे बढ़े। सरकार को अपनी भविष्य की योजनाओं में हमारी इस मांग को शामिल करना चाहिए।

क्रमशः – ***जीवन पथ***

पूर्व के भाग में हमने नरेन्द्र जी के उपन्यास "जीवन पथ" की प्रस्तावना पढ़ी। इस भाग में हम कथानक में प्रवेश करेंगे...

सृष्टि में प्रकृति के बौद्धिक प्रतिनिधित्व के लिए, इसके द्वारा आविर्भूत कृति के विषय में यदि सोचा जाए तो मनुष्य जाति से उपयुक्त नाम और कोई नहीं हो सकता है। इस विषय में सम्भवतः ही कुछ और कहा जा सके कि मनुष्य, सृष्टि के आत्मिक अस्तित्व से, इसकी अपनी योग्यता का स्वयं द्वारा अभिव्यक्त किया गया जीवित परिचय है। मानों कि प्रकृति ने मनुष्य को स्वयं की योग्यता के प्रसार एवं मूल्यांकन का पर्यवेक्षक नियुक्त किया है।

प्रकृति की कितनी ही महान परिकल्पनाओं को मूर्त रूप देता मनुष्य का अस्तित्व कुछ वैसी ही संघर्षमय परिस्थितियों से जूझकर चमत्कृत होता है जैसे कि देवमाता ने अपने स्थापना काल में स्वयं की स्थापना के लिए किए होगें। इसलिए इस दृष्टिकोण को सिद्धान्त के रूप में स्वीकार किया जा सकता है कि केवल मनुष्य ही नहीं बल्कि प्राणी मात्र के अन्तःकरण में निहित संघर्ष की अवधारणा हमारे लिए नियति का वह प्रसाद है जो हमे सामाजिक स्तर पर संगठित एवं विकासोन्मुख करता है। प्राचीन काल से आधुनिक काल तक, मानवता के विकास का प्रत्येक आयाम प्रकृति की प्रेरणा पर मानव जाति के संघर्ष की गाथा है। .....इस महान सत्य के विपरीत, मानव जाति ने अपने बुद्धि कौशल का प्रयोग प्रकृति की अपेक्षाओं के विरूद्ध भी किया है। मैं ऐसे प्रयासों को मनुष्य जाति की प्रकृति पर जीत की कोशिशों के रूप में नहीं देखता बल्कि मेरे विचार से मनुष्य द्वारा ऐसा करना उस आत्मज्ञान का परित्याग है जो प्रकृति ने मनुष्य को, स्वयं अपने

(प्रकृति के) संरक्षण के लिए प्रदान किया है। क्योंकि हम प्रकृति प्रदत्त सुविधाओं का उपभोग करने के स्थान पर, इन संसाधनों पर नियन्त्रण स्थापित करने के लिए भी ऐसे संघर्ष करते रहते हैं जिनसे न केवल मानवता त्रस्त होती है बल्कि हमारी सृजनकर्ता होने के कारण प्रकृति भी अपमानित होती है। ऐसे मानवता विभाजक संघर्षों को यदि श्रेणीबद्ध किया जाए तो सत्ता तथा आर्थिक दृष्टिकोण पर आधारित विभीत्स संघर्ष एक ही स्तर पर सहजतापूर्वक रखे जा सकते हैं। मूलतः देखा जाए तो मानव जीवन के संघर्ष की ये दो ऐसी विधाएं हैं जिन्होने हमे कुव्यवस्था के साथ राज्य के नाम पर मानवता की स्वतन्त्रता के हरण का वह पाठ पढ़ाया है जिसनें हमे हमारी सृजनकर्ता 'प्रकृति' के विरूद्ध ही संघर्ष का सबसे महान कारण बना दिया है। इस स्थिति में स्वयं को श्रेष्ठ सिद्ध करने के लिए अक्सर मानव जाति अपनी नीयत के दोष को नियति का दोष सिद्ध करने का प्रयास भले ही करे, लेकिन आधुनिक समाज में निरन्तर बढ़ती अव्यवस्था हमे यह एहसास कराकर सदैव से ही अपमानित एवं दण्डित भी करती रही है कि अन्ततः स्वार्थों की परिणति अपमान एवं विनाश के रूप में ही होती है। हम इस सच से कभी दामन नहीं छुड़ा सकते हैं। अस्तु हमारे स्वार्थो के दल-दल में फंसी निरीह मानवता, हमारी इस करनी का चाहे जैसा भी फल भोगती रहे!

मानवता के विरूद्ध, खुद मनुष्य जाति के ऐसे ही संघर्ष से त्रासद मसूद खां नाम का व्यक्ति बीसवीं सदी के उत्तरार्ध में काबुल से दिल्ली पहुंचता है। क्योंकि वहाँ सत्ता की उथल-पुथल से भड़की हिंसा में एक व्यक्ति दूसरे व्यक्ति को इसलिए मार देना चाहता था कि मानों वहाँ तब मानवता को जीवित रखने का यही अन्तिम उपाय है। अशान्ति, अव्यवस्था एवं आधुनिक विकास के विरूद्ध वहाँ की व्यवस्था के नीति नियोजकों के जाल में उलझा हुआ अफगानिस्तान वहाँ के कट्टर मजहबी तथा अधिनायकवादी दिशाहीन नेतृत्व तथा सामाजिक निष्क्रियता के कारण दुनिया की राजनीतिक शतरंज की बिसात का मोहरा बन जाता है। व्यवस्था की स्थापना का पूर्ण सत्य जीवन में सुरक्षा, न्याय एवं विकास की स्थापना में निहित है। इस कथन पर दूरदर्शिता पूर्वक दृष्टि डालें तो कभी-कभी पलायन, कायरता का नहीं बुद्धिमता का परिचायक भी सिद्ध होता है। नीति के इस उद्देश्य को समझते हुए, अपने बेहाल एवं अव्यवस्थित मुल्क को छोड़कर पुश्तैनी रूप से सूखे मेवों का व्यापार करने वाले खां साहब जब काबुल से दिल्ली पहुँचते हैं तो उनके पास उनकी दौलत के रूप में सिर्फ उनका परिवार बचता है। मनुष्य द्वारा स्थापित की गयी व्यवस्था जरा से कालान्तर में कुछ मनुष्यों को एक ही भूमण्डल पर नागरिक से व्यक्ति और फिर शरणार्थी बना देती है। मानवता के विरूद्ध, मनुष्य का व्यवस्था के नाम पर राज्य के गठन एवं उस पर सत्ता की स्थापना का यह कैसा संघर्ष है कि स्वयं मनुष्य, प्रकृति के प्रति अपने धर्म को अपनी इच्छानुसार परिभाषित करने का प्रयास करता है। इस रूढ सामाजिक परिवेश में यह मनुष्यकृत व्यवस्था हमे स्वीकार ही नहीं करने देती कि प्रकृति ने

अपना सृजन सार्वभौमिक उपयोग के लिए किया है और मानव जाति तो प्रकृति की इस घोषणा की व्यवस्था करने वाला माध्यम है। यही धारणा प्रकृति के धर्म का सार है। इसी के आधार पर प्रकृति अपना दोहन चाहती है।.....मात्र इस सत्य की जरा सी कड़वाहट सहन न करने के लिए हमने व्यवस्था शब्द के मूल उद्देश्य को ही त्याग दिया है और निहित स्वार्थों की पूर्ति के लिए जिस कुरीति को व्यवस्था के रूप में स्वीकार किया है उसमें जीवन का अस्तित्व समाज के अनुसार न रहकर राज्य के अनुसार हो गया है। फिर हमने इस राज्य नाम के तन्त्र के सार्वभौमिक चिन्तन का त्याग करके इसे भी वर्ग, संगठन, जातियों इत्यादि में बांट दिया।.....व्यक्ति की राजनीतिक इच्छाओं को तृप्त करने वाला राज्य। अर्थ के वैभव को विलासिता के स्तर तक भोगने वाला राज्य। धर्म के मूल दर्शन को नकारकर साम्प्रदायिकता एवं जातिवाद को जीवन दर्शन का निरर्थक नाम देकर इसे व्यवस्था का कारक सिद्ध करने वाला राज्य। .....राज्य के इन कुत्सित रूपों द्वारा समाज पर नियन्त्रण करने की विधा को हम आधुनिक भाषा में व्यवस्था (राज्य) कहना चाहते हैं। .....मेरे विचार से व्यवस्था के सन्दर्भ में मनुष्य जाति का यह दर्शन दिशाहीन है। समाज को व्यक्तियों का समूह न मानना तथा व्यक्तियों को नागरिक सिद्ध करना और फिर नागरिकों का आर्थिक, सामाजिक, राजनीतिक वर्गीकरण करके समाज को वर्गीकृत कर देना तथा फिर उस पर नियन्त्रण करना, व्यवस्था का मूल उद्देश्य नहीं हो सकता है, बल्कि ऐसा करने से तो व्यवस्था के चरित्र का अपमान ही होता है। ऐसी परिस्थिति का त्याग करना न तो राष्ट्रीय धर्म के विरूद्ध है और न मानवता के। हमे व्यवस्था के सन्दर्भ में मानव जाति के चिन्तन को ठीक दिशा में अग्रसर करना होगा। अब तो स्वयं को प्रकृति का श्रेष्ठतम प्रतिनिधि सिद्ध करने का हमारे पास यही विकल्प है। अलबत्ता अपनी बीवी के साथ दो मासूम बेटों के पिता 'खॉन साहब' को इस महानगर में युद्ध की त्रासदी तथा सत्ता की हिंसक उथल-पुथल से समाज पर पड़ने वाले दुष्प्रभावों से मुक्ति तो मिल जाती है लेकिन साथ में मिलता है एक बेगाना समाज। उन्हें महानगरीय व्यवस्था के रहस्य में उलझे जीवन में संघर्ष एवं आपत्ति की उस अतुलनीय वेदना को सहना पड़ता है जिसे कोई बेरोजगार एवं साधनहीन व्यक्ति ही समझ सकता है। मैं किसी विरले अपवाद के विषय में तो नहीं कहता लेकिन ढीठ आर्थिक सम्पन्नता नें शायद ही कभी बेरोजगारी एवं लाचारी से त्रस्त व्यक्ति को मिलने वाले कष्टों का अनुमान लगाया हो, अन्यथा दुनिया की व्यवस्थाओं में अर्थ के केन्द्रीयकरण का जिक्र ही न होता। पुराने समय से ही समाज में यह कोतूहल का विषय रहा है। क्या सम्पन्नता के आलमबरदार इसे अपना प्राकृतिक अधिकार मानते हैं? सम्भवतः हाँ! क्यांकि उन्हें पता है कि समाज में इस स्थिति के जीवित रहने पर ही तो उनका अस्तित्व जीवित रह सकता है। लेकिन नीतिवान व्यक्ति इस तथ्य की भी बड़ी सन्तुलित समीक्षा करते हैं। इस भौतिक समाज में हर विपन्न व्यक्ति सम्पन्न बनना भी तो चाहता है। .....हाँ

यदि व्यक्ति की अपने जीवन से सन्तुलित अपेक्षाएं हों तो यह उसका प्राकृतिक अधिकार भी होता है। जीवन में सफलता की अपेक्षा करना एवं उसे प्राप्त करने के प्रयास से ही प्रकृति के रहस्य खुलते है, जीवन का विकास होता है। यही संघर्ष का अर्थ भी है .....और प्रकृति के इसी महान रहस्य को समझते हुए काबुल का समृद्ध व्यापारी खां साहब, जरा से कालान्तर में दिल्ली में 'मजदूर' खां बन जाता है। वस्तुतः परिश्रम ही आदमी के पास ऐसा कुदरती सरमाया है जो उसे हर हालात पर जीत मंसब कराता है। .....खां अपने निश्चय पर यह सोचकर अम्ल करते हैं कि अब मेरा मुश्तकबिल मेरी औलाद के मार्फत अपनी मंजिल को हांसिल करेगा। उनकी इस सोच को मुकम्मल आयीना दिखाते हैं, दिल्ली में उनके अजीज बने प्रोफेसर श्रीवास्तव। एक बहुत ही शालीन व्यक्तित्व के मालिक एवं प्रबुद्ध समाजशास्त्री प्रोफेसर श्रीवास्तव उन्हीं के हमउम्र होते हैं। हालात के इत्फाक से हुआ इन दोनों शख्सियतों का मिलन समाज में मानवीय रिश्ते की मिशाल बन जाता है।

धीरे-धीरे वक्त बीतता है। भारत के शरणार्थी 'खां' का परिवार उनके एवं उनके हमदर्द के सहयोग से यहाँ की नागरिकता प्राप्त कर लेता है। हालात बदलते हैं। अंजानी परिस्थितियों में भी खां का परिवार प्रोफेसर श्रीवास्तव के सहयोग से बशर का साधन जुटा लेता है। खां, प्रोफेसर के विषय में चिन्तन करते हैं तो उनके लिए प्रोफेसर का चरित्र, भारतीय दर्शन का व्याख्याता ही सिद्ध होता है। इस बारे में वह कई बार खुद से दोहराते हैं- वास्तव में भारतीय मानस का मर्म, भावनाओं की गरिमा से भी ऊपर है। कितना निष्पक्ष! ... क्या इसे किन्हीं संगठनात्मक विचारों के बन्धन मे बांधा जा सकता है? सम्भवतः नहीं! इसका तो केवल इसके तत्वावधान में रहकर एहसास किया जा सकता है। वास्तव में पलायन के समय भारत आने की इच्छा, मेरे इस दृष्टिकोण पर ही तो आधारित थी। यहाँ आकर मैने समझा कि भारत को रिश्ते-नातों का देश क्यों कहा जाता है और किस प्रकार यह देश इतनी सहजता से अपनी सांस्कृतिक विरासत को अपने आँचल में समेटे हुए है! मेरे ख्याल में वैश्विक मानव समाज का अन्य कोई भाग इतना मर्मस्पर्शी और इतना पवित्र नहीं हो सकता। ..... थोड़ा ठिठक कर वह पुनः कहते हैं- भारतीय संस्कृति में 'अपनत्व' का विश्वकोष निहित है। यह खर्च करने पर उसी प्रकार बढ़ता चला जाता है जैसे कोई शिक्षक, शिक्षा का प्रसार करते हुए अपना शिक्षाकोष और बढ़ा लेता है। मैं भारतीय लोगों की कुछ आचरणगत भ्रष्टाचार की धारणाओं तथा कर्तव्य के प्रति निष्क्रियता का तो विरोध करता हूँ लेकिन नीति एवं संस्कारों के समन्वय के विषय में दुनिया सदा भारतीय दृष्टिकोण की कायल रहेगी और मैं इसकी इस विशेषता का अभिवादन करके खुद को सन्तुष्ट करता रहुँगा। समय की गति परिस्थितियों के नए-नए रूप लेकर हमारे सामने आती रहती है। देखते ही देखते दुनिया इक्कीसवीं सदी में प्रवेश कर जाती है। खां का मुश्तकबिल उनकी औलाद के रूप में सुनहरा यौवन लिए एक बार फिर उनके सामने खड़ा होता है। नए दौर के

इस यौवन को देखकर वह कभी प्रफुल्लित होते हैं तो कभी अपने अतीत को याद करके और भविष्य में इसके साथ हो सकने वाली उलझनों के विषय में सोचकर कुपित भी हो जाते हैं। ..... इस नए दौर को अलग-अलग लोग अपने-अपने ढंग से परिभाषित करते हैं। कुछ लोग इस आधुनिक शताब्दी को विकास एवं वैश्विक सामाजिक समभाव की सदी का नाम देते हैं, तो कुछ इसे संस्कृति, संस्कार एवं सिद्धान्तों के पतन की सदी कहने में भी गुरेज नहीं करते हैं। ..... अलग-अलग लोगों की अलग-अलग धारणाएं। लेकिन इस परिस्थिति में यह प्रश्न उठता है कि सार्वभौमिक धारणा कौन सी है? क्या मात्र यह नहीं कि मानवीय संस्कृति की बिनाह पर कार्य प्रणाली का वह ढाँचा खड़ा किया जाए जो समाज के सार्वभौमिक विकास का आधार बन सके। ..... विकास ! मेरे विचार से इस शब्द की सृष्टि बहुत जटिल है, इसके इस भौतिक अर्थ को तो हम स्वीकार करते आए हैं कि यह शब्द मनुष्य को वर्तमान की उलझनों से मुक्ति दिलाकर सुविधा सम्पन्न भविष्य की ओर ले जाता है, लेकिन इस आशा के प्रलोभन में हम यह भूल जाते हैं कि रहस्यात्मक उलझनों को बिना सुलझाएं यदि हम भविष्य के निर्माण की कल्पना करते हैं तो भविष्य सदैव असन्तुलित ही रहता है। सन्तुलन की स्थापना के लिए व्यक्तियों के समाज को विकास की प्रक्रियाओं की यह परिभाषा स्वीकार करनी ही होगी कि जब तक हम विकास की प्रक्रियाओं को केवल उपभोग के उद्देश्य से क्रियान्वित करते रहेंगें तब तक समाज भ्रष्टाचार से मुक्त नहीं होगा। वह भ्रष्टाचार सामाजिक, आर्थिक एवं राजनीतिक किसी भी प्रकार का हो सकता है। .....लेकिन ऐसी परिस्थिति में प्रश्न यह उठता है कि विकास की जो प्रक्रिया उपभोग के उद्देश्य से क्रियान्वित न की जाए तो उसके प्रयोजन का अर्थ क्या होगा? इस विषमता की विवेचना प्रकृति के रहस्य की व्याख्या करने के समान है। विकास का मूल स्रोत उपभोग में ही निहित होता है, लेकिन उसका भक्षण नहीं होना चाहिए। इस विषय को इस प्रकार स्पष्ट किया जा सकता है कि भक्षण उपभोग का वह कुत्सित रूप है जो निज की आवश्यकताओं की पूर्ति के बाद स्वयं को श्रेष्ठ सिद्ध करने के लिए ही किया जाता है। यह भक्षण धन और सत्ता दोनों अथवा किसी भी एक प्रकार का हो सकता है।

क्या हम इस सोच को नकार सकते हैं कि आवश्यकताहीन उपभोग जो कि भक्षण का ही रूप होता है, वह विकास की ऊर्जा को दिशाहीन कर देता है और फिर यह दिशाहीन ऊर्जा सामाजिक व्यवस्था को असन्तुलित कर देती है। मूलतः विकास शब्द की और भी व्यावहारिक समीक्षा करते हैं तो यह तथ्य सिद्ध होता है कि विकास अनुशीलन का विषय है, यह बन्धन अथवा नियन्त्रण का विषय न होकर व्यक्ति के द्वारा उसके आत्मिक अनुशासन से संरक्षित होने वाला विषय है। यहाँ पर विषय के दृष्टिकोण को इस तथ्य द्वारा स्पष्ट किया जा सकता है कि विकास का अर्थ समाज में केवल रोजगार के अवसर विकसित कराना नहीं होता है बल्कि प्राकृतिक तथा भौतिक अवस्थाओं का

ऐसा समायोजन जो यथार्थ की कसौटी के अनुसार हो तथा समाज की आकृति को वर्ग-संघर्ष में न उलझाए, विकास कहलाता है।

अलबत्ता मानवीय संस्कृति को संस्कृतियों का कपोल-कल्पित रूप देने वाले बहुत से लोग भी तो समाज में ही होते रहे हैं जो अपनी दिग्भ्रमित सोच को समाज के साथ राजनीति का उद्देश्य मानकर, मानवता के मस्तक पर अपना परचम लहराना चाहते हैं। कुछ ऐसे ही कुत्सित सोच के लोगों की सत्ता-पिपासा के जाल में उलझा हुआ अफगानिस्तान एक दिन दुनिया की महाशक्ति के कोप का भाजन बन जाता है। कुछ दिशाहीन और स्वार्थी लोगों की गलती पूरे समाज को युद्ध की विभिषिका में झोंक देती है। .....युद्ध! इस शब्द का उच्चारण करने मात्र से ही कोई भी संवेदनशील व्यक्ति सिहर उठता है, कितने लोग बेघर और तबाह हो जाएंगें! अफगानिस्तान का यही घटनाक्रम उन्हें उदास कर देता है। उनके मन में यह विचार बार-बार उमडता है कि इतने वर्षों से कुछ पथ भ्रष्ट और क्रूर राजनीतिज्ञों के हाथों की कठपुतली बना अफगानिस्तान किसी परमशक्ति से यह प्रार्थना करता हुआ महसूस होता है कि कोई आए और उसका अस्तित्व बचाए। कोई मेरे प्रांगण से युद्ध का प्रभाव समाप्त करे। क्या प्रकृति के आशीर्वाद से किसी ऐसी वैचारिक शक्ति का प्रादुर्भाव हो सकता है जो अमानुषिक हिंसावादियों की मानसिकता को बदल दे? क्योंकि युद्ध शान्ति का अन्तिम विकल्प नहीं होता हैं। विश्व का इतिहास अपने अनुभवों से इस सिद्धान्त को स्वतः प्रमाणित करता है। क्या वहाँ की सत्ता के क्रूर ठेकेदारों को कोई समझा सकता है कि मात्र उस देश में ही नहीं बल्कि दुनिया भर में, मनुष्यों के जीवन पर उनका अपना अधिकार होता है। क्योंकि जीवन की मूल स्वतन्त्रता को इसी तथ्य पर आधारित होकर तो परिभाषित किया जा सकता है।.....क्षण भर के लिए ठहर कर वह पुनः चिन्तन में डूब जाते हैं-वे लोग इस बात को क्यों नहीं समझते हैं कि सत्ता पर काबिज लोगों का प्रथम दायित्व यह होता है कि वह व्यवस्था के नैसर्गिक स्वरूप के अनुसार समाज में सन्तुलन बनाए रखें, न कि समाज की आधुनिक विकास प्रणालियों का दमन करके रूढ़िवाद के माध्यम से व्यवस्था शब्द को गलत ढंग से परिभाषित करने का प्रयास करें।

कितने वर्षों से वहाँ की निरीह मानवता रौंदी जा रही है। सत्ता के ठेकेदार लाशों के ढेर लगा रहे हैं।.....और 'खां' संचार माध्यमों से यह सब जानकर महसूस करते हैं कि उन्होने हकीकत का नजारा कर लिया है। आज रह-रहकर उनके मन में यही बात आती है कि कुछ सत्ता के भूखे लोगों ने वहाँ घिनौनी सियासत के ऐसे बीज बोये हैं कि आज विश्व भर की मानवता उनके काले कारनामों से थर्रा उठी है। कुछ जड मानसिकता के लोगों की गलत सोच के कारण आज वैश्विक मानवता का जो विभाजन हुआ है और दुनिया के लोगों में परस्पर विश्वास खत्म होकर सभ्यता के

टकराव की जो स्थिति पैदा हुई है, क्या भविष्य की दुनिया कभी इस घिनौनी और खौफनाक धारणा का त्याग कर सकेगी या यह अभिशाप मेरे मादरेवतन को रहती दुनिया तक यूँ ही बेईज्जत करता रहेगा। ..... अपने इस चिन्तन में खोए खां के मुँह से कराह भरी आवाज निकलती है -क्यों? आखिर क्यों हुआ वहाँ ऐसा? .... इतना कहते-कहते उनकी आँखों से आँसुओं का सैलाब बह निकलता है कि तभी उनकी बेटी 'सिमी' उनका ध्यान भंग करते हुए कहती है- क्या बात है पापा, आप रो रहे हैं?

सिमी की आवाज सुनकर उनका ध्यान टूटता है तो वह अपने आप को संभालते हुए कहते हैं- "नहीं बेटी मैं रो नहीं रहा हूँ बल्कि मन का मैल धो रहा हूँ।"

लेकिन किस वजह से? वह पूछती है।

आज फिर वहाँ की याद आ गयी सिमी जहाँ मैं पैदा हुआ था। जहाँ मैने अपना दिलकश बचपन गुजारा था और जहाँ मैने जिन्दगी के होश को कामयाबी का आयाम देने की शुरूआत की थी। यह हकीकत है कि फिलहाल वहाँ की तबाही के आलम से मेरा कोई सरोकार नहीं बचा है लेकिन वहाँ की खबरे मेरे वजूद को दहला देती हैं कि कितना भयानक मेरे गुलिश्तां की तबाही का मंजर होगा! ..... क्षणभर चुप होकर वह भावुकता वश पुनः कहते हैं- "सिमी! तुम बता सकती हो बेटी कि किस बला की बद्दुआ ने वहाँ का अम्न-चैन छीन लिया है?"

क्रमशः ...

मंथन क्रमांक 133:

किसी भी व्यक्ति की भौतिक उन्नति का लाभ मुख्य रूप से व्यक्तिगत होता है और नैतिक उत्थान का लाभ समूहगत या सामाजिक। अधिकारों के लिए चिंता या प्रयत्न भौतिक उन्नति के उद्देश्य से किए जाते हैं और कर्तव्यों का प्रयत्न नैतिक उत्थान के निमित्त होता है कर्तव्य पालन हमेशा समाज को लाभ देता है।

सूचना

साथियों हमारे मार्गदर्शक श्रद्धेय बजरंग मुनि जी यह कहते हैं कि विपरीत विचार रखने वाले लोगों के साथ "विचार मंथन" के माध्यम से ही सभी प्रकार की समस्याओं के समाधान की शुरुआत हो सकती है। ज्ञान तत्त्व पाक्षिक पत्रिका के माध्यम से भी हमारा सदा से प्रयास रहा है की समाज में प्रचलित भ्रम और प्रपंच पर सत्यासत्य का उद्घाटन निर्भीकतापूर्वक किया जा सके।

जैसा की आप सभी जानते है पिछले 65 वर्षों से भी अधिक समय से पत्रिका का प्रकाशन शुल्क के रूप में आप सबके स्वैच्छिक सहयोग द्वारा ही किया जा रहा है। मुनी जी के कर्म सन्यास की घोषणा के बाद व्यवस्था की दृष्टि से हमारे अनेक साथियों ने अपनी सहयोग राशि 250रु हमें भेजी। ज्ञान तत्त्व पाक्षिक पत्रिका और संस्थान द्वारा प्रकाशित 7 पुस्तकों का सेट उन्हें रजिस्टर्ड बुक पोस्ट द्वारा भेजा जा चुका है/भेजा जा रहा है।

आप सभी सुधि पाठक जनों से विनम्र आग्रह है कि सहयोग राशि भेजने के साथ **१) उसकी पावती २) अपना पूरा पता और ३) फोन नंबर.** मुनि जी को 09617079344, संस्था को 07869250001 अथवा मुझे 8318621282 में से किसी भी मोबाइल नंबर पर अवश्य भेज दें।

हमारे कुछ साथियों ने जो हमें सहयोग राशि भेजी है उसके साथ पता और फोन नम्बर नहीं था उनका उपलब्ध विवरण निम्नवत है आप कृपा करके उपरोक्त नम्बरों पर संपर्क करने की कृपा करें जिससे पत्रिका सुचारू रूप से आप के पास पहुँच सके।

१. Sunil Sangheel upi id - UPI/358202777969/UPI/sunilsangee1@ok/State Bank Of india
२. Rahul Yadav Sapla upi id - UPI/322997301224/PaymentfromPh/rahulyadavsapla/H
३. Sangam pandey s/o Arjun pandey upi id - UPI/407671447028/UPI/sangamp163-1@ok/Union Bank of I/SBI

ज्ञानेन्द्र आर्य

MARGDARSHAK SAMAJIK SHODH SANSTHAN
ACCOUNT No. – 777305500185 **IFSC** Code - ICIC0007773
BRANCH – FAFADIH RAIPUR

भावी भारत का संविधान सहयोग राशि ₹50	वर्तमान संविधान की खामियों एवं उसके निराकरण का सुंदर विश्लेषण करती, देशभर के तमाम विद्वानों एवं बुद्धिजीवियों के साथ निरंतर 20 वर्षों तक शोध के उपरांत लिखी इस पुस्तक की लोकप्रियता का अंदाजा इसी से लगाया जा सकता है कि अब तक तीन बार इसे अलग–अलग संस्थानों के द्वारा छपवाया जा चुका है।
मुनि मंथन निष्कर्ष सहयोग राशि ₹50	श्रद्धेय मुनि जी के 70 वर्षों तक देशभर के मूर्धन्य विद्वानों एवं सामाजिक कार्यकर्ताओं के साथ निरंतर 'विचार मंथन' के निष्कर्षों को सूत्र रूप में समेटे, इस पुस्तक को तैयार होने के बाद भी 4 वर्षों तक इसमें संकलित सिद्धांतों पर देशव्यापी विमर्श के उपरांत यह पुस्तक आपके सामने आ पाई है।
मौलिक व्यवस्था का विचार सहयोग राशि ₹50	यह पुस्तक 'व्यवस्था' पर तमाम वैश्विक संदर्भों के आधार पर गहन विश्लेषण प्रस्तुत करती है। समाज के प्रत्येक इकाई के स्वतंत्रता सुरक्षा के साथ पोषण की गारंटी पर एक रिसर्च मॉडल के रूप में है यह पुस्तक है।
बस अब बहुत हो चुका सहयोग राशि ₹50	व्यवस्था की खामियों एवं उसके समाधान के लिए आवश्यक प्रभावी विचार एवं उद्दीपक ऊर्जा को अपने में समेटे इस पुस्तक को लिखा है अशोक गाड़िया जी ने। यह पुस्तक 'व्यवस्था परिवर्तन' के वैचारिक पृष्ठभूमि को तैयार करती है।
मुनि मंथन सहयोग राशि ₹10	श्रद्धेय मुनि जी के विचारों को गागर में सागर सा अपने में समेटे सीधे सरल समझ में आने वाली शैली में लिखी यह पुस्तक, एक रंगकर्मी निर्देशक निर्माता एवं लेखक आनंद गुप्ता जी की रचना है। शराफत से समझदारी की ओर जाने वाले मार्ग का पथ प्रदर्शक के रूप में या पुस्तक पठनीय है।
रामानुजगंज एक आवाज सहयोग राशि ₹10	अपने में श्रद्धेय बजरंग मुनि जी के जीवन की झलक समेटे इस पुस्तक को श्री नरेंद्र जी ने नाटक की शैली में लिखा है। सामाजिक समस्याओं एवं उसके निराकरण पर पात्रों के माध्यम से यथार्थ को नए रंग रोगन में प्रस्तुत करती है यह पुस्तक।
एक ही रास्ता सहयोग राशि ₹10	नुक्कड नाटक गीत संगीत जैसे सांस्कृतिक विधाओं से लोगों को समझदार बनने की प्रेरणा देने के लिए मुनि जी ने अपनी युवावस्था से ही प्रयास शुरू कर दिए थे। उन तमाम गीतों एवं दृश्यों को नाटक के रूप में इस पुस्तक में लिपिबद्ध किया गया है।

इन पुस्तकों का एक सेट मंगाने के लिए मात्र ₹100 का आर्थिक सहयोग और अतिरिक्त डाक खर्च देना होगा। इन पुस्तकों को एक साथ मंगाने के लिए सम्पर्क करें–8318621282, 7869250001, 9617079344

हमारी संस्थाएँ

■ मार्गदर्शक समाजिक शोध संस्थान ■ ज्ञानयज्ञ परिवार

संस्थान के कार्य ■ समाज विज्ञान पर विश्वव्यापी रिसर्च तथा निष्कर्ष निकालना।

परिवार का कार्य

■ देश भर में ज्ञान केन्द्रो का इस तरह विस्तार हो कि वहाँ स्वतंत्र विचार मंथन हो तथा संवाद प्रणाली विकसित हो।

कार्यक्रम

■ ज्ञान चर्चा –प्रतिदिन शाम साढ़े आठ से साढ़े नौ बजे तक किसी एक पूर्व घोषित विषय पर स्वतंत्र वेबिनार।

■ महायज्ञ – वर्ष में एक बार या दो बार बड़े सामुहिक यज्ञ का आयोजन।

■ मार्गदर्शक मंडल – ऐसे न्यूनतम पाँच सौ लोगों की टीम तैयार करना जो समाज विज्ञान पर रिसर्च करने की क्षमता रखते हैं।

■ ज्ञान कुंभः– वर्ष मे दो बार पंद्रह–पंद्रह दिनो के ज्ञान कुंभ जिसमें मार्गदर्शक मंडल के लोग स्वतंत्र विचार द्वारा प्रतिदिन दो–दो विषयों पर निष्कर्ष निकाल कर समाज को दें।

माध्यम

- ज्ञान तत्व पाक्षिक पत्रिका
- यू टयूब चैनल
- फेसबुक एप से प्रसारण
- इंस्टाग्राम
- वॉट्सऐप ग्रुप से प्रसारण
- टेलीग्राम
- जूम एप पर वेबिनार
- कू एप

ज्ञानतत्व पाक्षिक पत्रिका का माह में दो प्रति का प्रकाशन सुचारू रूप से होना शुरू हो गया है। इसकी सहयोग राशि रू. 100/- वार्षिक अभी तय किया गया है। लेख प्रस्तुती आदि पर सुझाव अवश्य दें।

पंजीकृत पाक्षिक
पंजीकरण क्रमांक–68939 / 98

डाक पंजीयन क्रमांक–छ.ग. / रायगढ़ / 10 / 209–2021

प्रति,

श्री / श्रीमती _____

_____

_____

_____

संदेश

वर्तमान संसदीय लोकतंत्र में तो संसद एक जेल खाना है। जहां हमारा भगवान रूपी संविधान कैद है। भगवान को जेलखाने से मुक्त कराना हमारी सर्वोच्च प्राथमिकता है। संसदीय लोकतंत्र को सहभागी लोकतंत्र में बदलना ही होगा। लोक संसद के लिये आंदोलन इसका प्रारंभिक चरण है। लोक स्वराज्य मंच ने इसकी पहल की है। लोक स्वराज्य मंच से जुड़िये और अपने भगवान को जेलखाने से मुक्त कराने की पहल कीजिए।

पत्र व्यवहार का पता

पता – बजरंग लाल अग्रवाल पोस्ट बॉक्स 15, रायपुर (छ.ग.) 492021
website : www.margdarshak.info

प्रकाशक, सम्पादक व स्वामी – बजरंगलाल
09617079344
Email : bajrang.muni@gmail.com
Support@margdarsgak.info
Facebook Id : **बजरंग मुनि** (User Name)

मुद्रक– माया प्रेस रामानुजगंज, सरगुजा (छ.ग.)